रिपोर्ट

अन्तर्राष्ट्रीय ई–शोध संगोष्ठी

दिनांक – 12.12.2020

महात्मा गाँधी बालिका विद्यालय (पी.जी.) कॉलेज, फिरोजाबाद

विषयः समाज के निर्माण में साहित्य संगीत और कला की भूमिका

भारतीय संस्कृति के मूल में निहित "सत्यं शिवं सुन्दरम्" की अभिव्यंजना साहित्य संगीत और कला के माध्यम से आकार पाती है। साहित्य बुद्धि का विकास है, कला मन का प्रकाश और संगीत हृदय का उल्लास है, इन तीनों तत्वों का समाज की संरचना में महत्वपूर्ण योगदान है। सामाजिक दृष्टिकोण से साहित्य, संगीत और कला की भूमिका का विश्लेषण करने के उद्देश्य से महात्मा गाँधी बालिका विद्यालय (पी.जी.) कॉलेज, फिरोजाबाद उ0प्र0 के संस्कृत विभाग एवं राष्ट्रीय संस्कृत मंच, उ0प्र0 प्रान्त के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक : 12.12.2020 को **"समाज के निर्माण में साहित्य, संगीत और कला की भूमिका"** विषय पर एकदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय ई–शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में **जूम एप** और **यू ट्यूब** आदि के माध्यम से देश–विदेश के 600 विद्वानों एवं प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

कार्यक्रम के आरम्भ में सरस्वती वन्दना के उपरान्त संगोष्ठी संयोजिका एवं संस्कृत विभागाध्यक्षा डॉ0 तुलसी देवी ने ज्ञान की आभा से मण्डित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय अभ्यागत् महान् विभूतियों का स्वागत, वन्दन और अभिनन्दन किया। तथा कार्यक्रम से जुड़े हुए सभी शिक्षकों, अधिकारियों, शोधार्थियों, जिज्ञासुओं और सुधीजनों का स्वागत किया। इसके साथ ही शोध–संगोष्ठी के विषय पर बीज–वक्तव्य देते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य, संगीत और कला–इन त्रिविध विधाओं का साधक जीवन और जगत् की गहनतम अनुभूतियों को सौन्दर्य से सम्पृक्त करके मानव कल्याण की रूपरेखा निर्धारित करता है। मानव के अन्तःकरण का विकास और परिष्कार कर साहित्य, संगीत और कला जीवन में मधुमयता का बोध कराते हैं और मानव समाज को प्रेम से परिपूर्ण कर देते हैं। मानव–मानव के बीच सह–अस्तित्वपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना सामाजिक संरचना को सुदृढ़ आधार प्रदान करती है।

वर्ल्ड हिन्दी सेक्रेटरिएट, मॉरीशस के जनरल सेक्रेटरी एवं मुख्य अतिथि प्रोफेसर विनोद कुमार मिश्र ने साहित्य को लोक–कल्याण युक्त, जनमानस को जागरूक करने वाला और

अक्षुण्ण बताते हुए कहा कि साहित्य समाज का दर्पण, मार्गदर्शक एवं लेखा–जोखा करने वाला उपकरण है। साहित्य सम्बन्धित राष्ट्र एवं उस युग की अधिकृत जानकारी प्रदान करता है, ये समाज की आत्मा है, जो अजर व अमर है। समाज एवं राष्ट्र नष्ट हो सकता है लेकिन साहित्य और उसमें निहित मूल्य कभी नष्ट नहीं होते। साहित्य लोक कल्याण के लिए सृजित होता है इसलिए इसमें केवल निरर्थक अभिव्यक्ति निहित न होकर समाज के लिए आवश्यक उपदेश निहित होने चाहिए। साहित्य जनमानस की चित्तवृत्ति का प्रतिबिम्ब है, साहित्य विचारों से जन्म लेता है और विचारों में समाज का प्रतिबिम्ब होता है। जब समाज की विचारधारा में परिवर्तन करना होता है, तो साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके द्वारा सरलता से जनमानस को जागरुक किया जा सकता है, मार्गदर्शन दिया जा सकता है। भारतवर्ष की प्रमुख विशेषता यही है कि हमारी साहित्य सम्पदा अमूल्य है। साहित्य केवल संवाद या सम्प्रेषण से नही बनता, बल्कि किसी समाज की परम्परा की अभिव्यक्ति के साथ–साथ परम्परा की सृजनात्मकता में भी इसका योगदान है। जब किसी भी समाज का, किसी भी राष्ट्र का सहित्य बचेगा तभी संस्कृति बचेगी, जो राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है। साहित्य में एक चिन्तन प्रणाली है, विचार प्रणाली है जो समाज की स्वाधीनता के लिए आवश्यक है। वर्तमान में पाश्चात्य के छद्म से साहित्य को संरक्षित करने की आवश्यकता है। सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना तथा भोगवादी परम्परा से मुक्ति पाना अत्यन्त जरूरी है। साहित्य लोकमानस की संवेदना को आकार प्रदान करता है। अतः साहित्य की भूमिका में सम्वर्द्धन करके राष्ट्र की स्वाधीन चेतना को सुरक्षित करना है एवं अपनी गौरवशाली परम्परा का आदर्श स्थापित करना है जिससे कि श्रेष्ठतम साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से भारतवर्ष पुनः सम्पूर्ण विश्व में बृहद परम्परा को स्थापित करने में सक्षम हो सके।

दिल्ली विश्वविद्यालय–गाँधी भवन के निदेशक एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष व मुख्य वक्ता प्रोफेसर रमेश चन्द्र भारद्वाज ने कहा कि साहित्य संगीत और कला एक दूसरे से संयुक्त हैं। इनका एक ही उद्देश्य है कि ऐसे समाज का निर्माण करें जो मानवीय संवेदना से परिपूर्ण हो। मुगल काल की बात करते हुए उन्होंने कहा कि उस काल में जब भारतीय समाज प्रताड़ना से पीड़ित था, तब सन्त साहित्य ने ही भारतीय समाज को संजीवनी दी, जीने की शक्ति प्रदान की अतः साहित्य एक सशक्त माध्यम है। संगीत के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा कि प्रकृति के विशाल भण्डार में विभिन्न ध्वनियां है, प्राचीनकाल से ही वेदमन्त्रों के माध्यम से विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों का आह्वान किया जाता रहा है, जो समाज को एक सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती हैं। **वास्तव में साहित्य,**

संगीत और कला को ऐसा होना चाहिए जो मानव का सर्वांगीण विकास करे, लोककल्याणकारी हो एवं समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने में सार्थक भूमिका का निर्वहन कर स्वस्थ एवं सुरक्षित समाज का निर्माण कर सके।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय–उर्दू विभाग के पूर्वाध्यक्ष एवं विशिष्ट वक्ता प्रोफेसर सगीर अफराहीम ने कहा कि उर्दू जबान का संस्कृत, हिन्दी और हिदुंस्तान से अटूट सम्बन्ध है। सूफी दरगाहों पर मन्नत के लिए जो धागा बाँधा जाता है उसका रंग केसरी है, सूफियों और संतो का मेल और मिलाप का, मौहब्बत और भाईचारे का रंग केसरी है जो साहित्य, संगीत और कला में प्रस्फुटित होता है। अमीर खुसरो हों या बावा फरीद, कबीर हों या रसखान इनसे जो साहित्य प्रतिपादित हुआ है उसमें यही रंग सबसे ज्यादा बसा हुआ है। ज़बान (भाषा), अदीब (साहित्यकार), फनकार (कलाकार) किसी मजहब के नहीं होते वह हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई नहीं वह पहले अदीब हैं, फनकार हैं। गालिब सिर्फ उर्दू के शायर नहीं बल्कि हिन्दुस्तान की शान हैं।

अंग्रेजों ने हमारे देश में हिंदी और उर्दू का फर्क पैदा किया। जबान वह है जिसे हम ने अपनी माँ से सीखा है, माँ बच्चे को केवल प्रेम की ज़बान सिखाती है। प्रेमचन्द्र हिंदी और उर्दू का विवाद हल करने के पक्षधर थे। हिन्दी और उर्दू दोनों हिंदुस्तानी हैं सिर्फ लिपि का फर्क है। उनकी रुह, उनका जज्बा एक ही है। अल्लामा इकबाल कहते हैं:–

शक्ति भी शांति भी भक्तों के गीत में है,
दुनिया के वासियों की मुक्ति प्रीत में है।

आज साहित्य पर यह जिम्मेदारी और भी बढ़ गई है कि हमें मुहब्बत, भाईचारे, इंसानियत, एकता और देशप्रेम के जज़्बात को ज़्यादा हाईलाइट करना है और दिखाना है कि हम जिस धरती के रहने वाले हैं, जिस गंगा जमुनी तहजीब में पले बढ़े हैं, उस पर अपनी जान, अपना सर्वस्व अर्पण कर सकते हैं।

पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़– डिजायन एवं कला विभाग की पूर्व डीन एवं संगीत विभाग की पूर्वाध्यक्षा–विशिष्ट वक्ता प्रोफेसर पंकजमाला शर्मा ने वैदिक साहित्य व संगीत पर विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि सभ्यता के विकास के साथ ही संगीत और फिर साहित्य का विकास हुआ है संगीत, साहित्य एवं लोकसाहित्य कभी अलग नही हो सकते क्योंकि जब संगीत के साथ साहित्य जुड़ता है तो संगीत को एक विषय मिलता है और जब साहित्य के साथ संगीत मिलता है तो साहित्य को जुबान मिलती है वह और अधिक प्रभावोत्पादक बन जाता है। इसी संदर्भ में उन्होने

पुष्टिदायक मंत्रो का भी उल्लेख किया। भाषा की चर्चा करते हुए इन्होने कहा कि जहाँ तक भाषाओं की बात है सभी भाषाएँ भिन्न–भिन्न हैं, किन्तु कोई भाषा खराब नही होती, सबका अपना महत्व एवं स्थान है और उनमें निबद्ध साहित्य एवं संगीत दोनों का ध्येय एक ही है अपनी गौरवशाली परम्परा का विस्तार एवं प्रसार करना। अपनी संस्कृति का, अपने साहित्य का, अपने विचार और अपनी सभी भाषाओं का, अपने देश की सीमाओं का जब तक हमें स्वाभिमान है, तब तक हिन्दुस्तान को किसी भी सांस्कृतिक पहलू से कोई खतरा नहीं हो सकता। अगर हमारा संगीत, साहित्य, हमारे संकल्प एक होगें हमारी कार्यप्रणाली एवं विचार एक होगें तो भारतवर्ष निरंतर आगे बढ़ता रहेगा।

राजकीय महारानी लक्ष्मीबाई बालिका (पी.जी.) कॉलेज, इन्दौर के चित्रकला विभाग की अध्यक्षा व विशिष्ट वक्ता प्रोफेसर कुमकुम भारद्वाज ने कहा कि कला और साहित्य से सम्बन्धित दो बाते अधिक प्रचलित हैं 1. कला कला के लिए 2. कला जीवन के लिए। पहले का उद्देश्य लोगों का मनोरंजन करना है और दूसरे का उद्देश्य जनसेवा करना एवं अन्याय, उत्पीड़न के विरुद्ध भावनाओं को पैदा करना, जिससे आम आदमी का जीवन श्रेष्ठ बन सके। सभी कलाएं मनोदशाओं पर अधिक केन्द्रित होती है। साहित्य एवं कला में दो मूल प्रवृत्तियाँ भी हैं यथार्थवाद एवं स्वच्छन्दतावाद। जिन कलाओं एवं साहित्य में इन दोनों का समागम होता है, वह सर्वश्रेष्ठ एवं प्रभावी होता है।

साहित्य शब्दों की कला है जिसमें विचार एवं चिंतन अधिक होता है। वास्तव में जो समाज में घटित होता है वही कलाकार अपनी कलाकृतियों में दिखाता है। कला सामाजिक संघर्षों की ऑच से ही विकसित होती है पिकासो ने भी कहा है कि "कला जिंदगी से अनावश्यक तत्वों को छॉटने का काम करती है"। कलाकृति मनुष्य को जीवन की सच्चाई से रूबरू कराती है, सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का काम करती है। कला समाज के निर्माण एवं विकास में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष भूमिका निभाती है अतः यह कलाकार का दायित्व है कि वह अपनी कला के माध्यम से समाज को प्रेरित करने एवं जनमानस को संवेदनायुक्त बनाने एवं जागरूक करने का कार्य करे।

कार्यक्रम अध्यक्षा एवं महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 निर्मला यादव ने अपने वक्तव्य का आरम्भ संस्कृत श्लोक से करते हुए कहा कि–

"येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्यर्लोके भुविभारभूता, मनुष्यरुपेण मृगाश्चरन्ति।।

अर्थात् जिनके पास न विद्या है न तप है, न दान है न ज्ञान है, न शील है न गुण है, न धर्म है ऐसे मनुष्य पृथ्वीलोक में भारस्वरूप हैं और मनुष्य रूप में रहते हुए भी वे पशु के समान विचरण

करते हैं। यह संकेत करता है कि ज्ञान की जो श्रेणी है वह शब्दों के साथ ही संगीत और कला के माध्यम से व्यक्त होती है। मनुष्य की पशुओं से भिन्नता शारीरिक संरचना तक सीमित न रहकर उसके आगे बढ़कर विविध कलाओं में रुचि लेना, चिन्तन–मनन की सामर्थ्य विकसित करना, परोपकार आदि कार्यों में संलग्न होना, आध्यात्मिक रुप में रुचि रखना आदि में केन्द्रित होनी चाहिए, तभी मनुष्य जीवन की सार्थकता है। कवि और चित्रकार में भेद है। कवि अपने स्वर में और चित्रकार अपनी रेखाओं में जीवन के तत्व और सौन्दर्य का रंग भरता है। मानव की बहुमुखी भावनाओं का प्रवाह जब रोके नहीं रुकता है तो वह साहित्य, संगीत और कला के रुप में फूट पड़ता है। कला के अधिकांश विषय तत्कालीन समाज की समस्यायें ही हुआ करती हैं। इस उद्देश्य के लिए नवसृजन में व्यक्तित्व गौण रुप ले लेता है, और समाज की आवश्यकताओं का प्रतिबिम्ब उसके सृजन से स्पष्ट झलकता रहता है। साहित्य समाज का दर्पण है जो कुछ समाज में होता है वह साहित्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। साहित्यकार कभी सुप्त नहीं रहता। समाज की उन्नति के लिए, विकास के लिए वह साहित्य, संगीत और कला के रुप में इन तत्वों को अभिव्यक्त करता है। संगीत, कला और साहित्य सृजन हेतु संगीतकार, कलाकार और साहित्यकार में संवेदनात्मक प्रवृत्ति का होना आवश्यक है।

साहित्य शब्दों की विद्या है, जो अर्न्तमन को प्रभावित करती है और युगानुकूल संस्कृति व परम्परा का लेखाजोखा उपलब्ध कराती है। संगीत हमारी हृदयतंत्री को झंकृत करता है। कला तत्कालीन समाज की स्थितियों एवं भावों को स्पष्ट करती है।

अब समय आ गया है नई शिक्षा नीति को क्रियान्वित करने का। यह सोचने का विषय है किस प्रकार शिक्षा नीति को क्रियान्वित करेगें, कैसे पाठ्यक्रम में बदलाव करेगें। वास्तव में अब ऐसे साहित्य का सृजन करना होगा जो देश की संस्कृति के अनुकूल हो, हमारे देश के गौरव को संरक्षित कर सके, हमारे जीवन मूल्यों की सुरक्षा कर सके। यदि हम सभी शिक्षक साहित्यकार और कलाकार मिलकर इस दिशा में प्रयास करेंगे, तो वह समय अवश्य आयेगा जब हमारा देश, हमारे बच्चे और हमारा राष्ट्र हम सभी पर गौरव का अनुभव करेगें।

अतिथि वक्ता के रुप में इन्डियन स्कूल निजवा सल्तनत, ओमान के शिक्षक डॉ0 अशोक कुमार तिवारी तथा **एल0आर0डी0ई0, बेंगलुरु के वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी डॉ0 रंजीत कुमार** ने **"पावर पॉइन्ट प्रेजेंटेशन"** के माध्यम से शोधपरक एवं ज्ञानवर्द्धक व्याख्यान देकर सभी को लाभान्वित किया। **तकनीकी सत्र** में प्रतिभागियों ने शोध–पत्र वाचन किया।

कार्यक्रम के अन्त में **संगोष्ठी समन्वयक एवं राष्ट्रीय संस्कृत मंच के राष्ट्रीय सचिव डॉ0 राजेश कुमार मिश्र** ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सह–संयोजिका एवं कला विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ0 पूनम ने तथा संगीत विभाग की असिस्टेन्ट प्रोफेसर डॉ0 निष्ठा शर्मा ने किया। मीडिया प्रकोष्ठ में ऐसोसिएट प्रोफेसर डॉ0 रत्ना सक्सैना, ऐसोसिएट प्रोफेसर कु0 रीता दीक्षित, ऐसोसिएट प्रोफेसर डॉ0 फरहा तबस्सुम, ऐसोसिएट प्रोफेसर डॉ0 राज्यश्री मिश्रा ने सक्रिय सहयोग किया। आयोजन समिति के सभी सदस्यों तथा महाविद्यालय परिवार के समस्त सदस्यों का सराहनीय योगदान रहा।

12/12/2020

(डॉ0 निर्मला यादव)

प्राचार्या एवं कार्यक्रम अध्यक्षा

Principal
M.G.B.V. (P.G.) College
Firozabad

12.12.2020

(डॉ0 तुलसी देवी)

संयोजिका एवं संस्कृत विभागाध्यक्षा